श्री गोरखनाथ का सरभंगा जंजीरा मन्त्र

ॐ गुरु जी मैं रसभंगी का संगी, दूध मांस का इक रंगी ।
एकतमर दरसे, तमर में झाई, झाई में परधाई दर से, वहाँ दरसे मेरा साई ।
मूल चक्र सरभंग का आसन कुण सरभंग से न्यारा है,
वहीं में श्यामविराजे ब्रह्मतन्त्र से न्यारा है ।
अवगड़ का चेला, फिरूँ अकेला, कभी न शीश नवाऊंगा

पत्र पूर परतन्त्र पूरूँ ना कोई भ्रांत ल्याऊंगा।
अजर बजर का गोला गेरूं परवत पहाड़ उठाऊंगा
नमी डंका करो सनेवा, रखो पूर्ण बरसता मेवा,
जोगी जग से न्यारा है, जुग से कुदरत है न्यारी,
सिद्धां की मच्छियां पकड़ो, गाड़ देओ घरणी मांही;
बावन भैरूं चौसठ जोगिन, उसटा चक्र चलावै वाणी :

पेडू में अटका नाड़ा ना कोई मांगे हजरत भाड़ा,
मैं भटियारी आग लगा दियूं, चोर चकारी बीज बारी
सात रांड दासी म्हारी, बानाचारी कर उपकारी, कर उपकार चल्याऊंगा।
सीवो दावो ताप तिजारी, तोड़ तीजी ताली
खट्चक्र का जड़दू ताला, कदेई ना निकले गोरख वाला

डाकिनी शाकिनी भूताजा का कारस्यूं जूता,
राजा पकडू हाकिम का मुँह कर दूँ काला ।
नौ गज पीछे ठेलूंगा, कुवें पर चादर घालूं, आसन घालूं गहरा,
मण्ड' मराणा धुनो धुकाऊं नगर बुलाऊं डेरा ।
यह सरभंगा का देह, आपही कर्त्ता आपही देह,
सरभंगा का जाप सम्पूर्ण सही, संत की गद्दी बैठ के, गुरु गोरखनाथ जी कही ।

eAstroHelp